अजायब बानी

मासिक पत्रिका
अप्रैल-2025

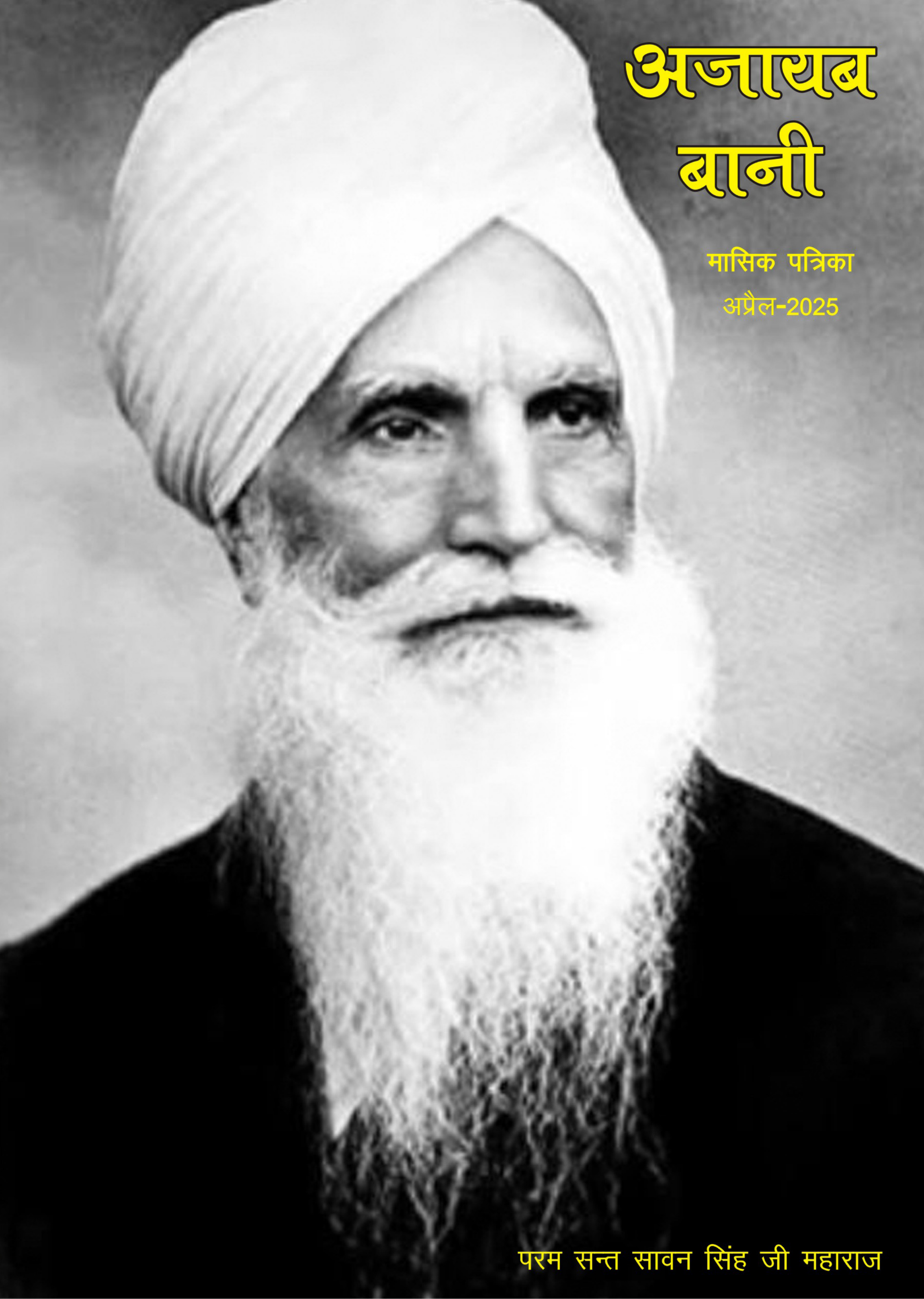

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–बारहवां	अप्रैल–2025

3 परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
सच्चा भिखारी

9 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
मन के किले पर वार

21 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज का
फौजी जीवन

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 277 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

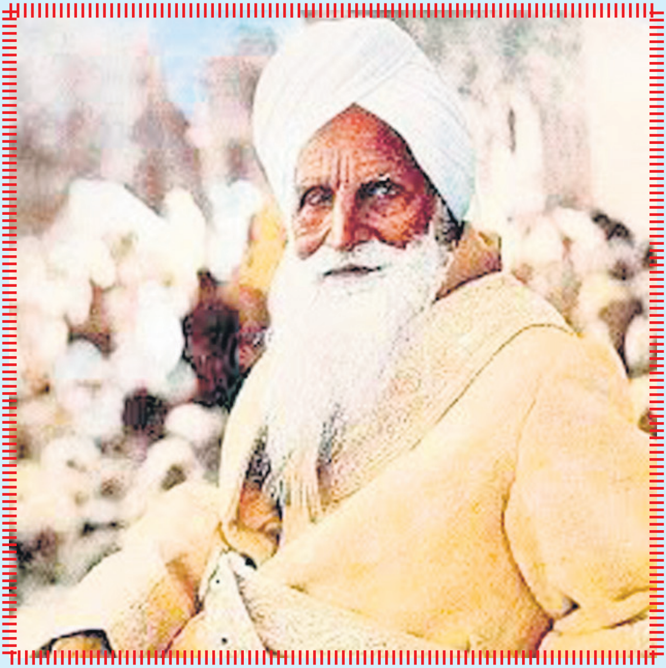

सावन गुमदा–गुमदा गुम होया

1. *सावन गुमदा–गुमदा, गुम होया,*
   चंगा साऊ ओह जीव करतार दा सी, (2)

2. *मुसलमान इसाईयां ते, हिन्दुआं नूं*
   नाले सिक्खां नूं वी सतकार दा सी, (2)

3. *हर घड़ी सरबत दा, भला मंगदा*
   कदे किसे नूं वी ना ही मार दा सी, (2)

4. *नक्श नैण सोहणे अते, उम्र वड्डी,*
   'अजायब' उस नूं सावन, पुकार दा सी, (2)

बाबा सावन सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

सच्चा भिखारी

सन्त चमत्कार नहीं करते अगर वे चमत्कार करें तो सारी दुनिया ही उनके पीछे लग जाए। एक सन्त के लिए किसी को आँख दे देना, किसी को बच्चा दे देना, किसी को धन–दौलत दे देना या किसी की लाईलाज बीमारी को ठीक कर देना कोई मुश्किल नहीं।

दुनिया में काल का राज्य है, काल ने सतपुरुष से वर लिया हुआ है कि सन्त चमत्कार दिखाकर नहीं बल्कि आत्माओं से भक्ति करवाकर लाएं। सन्त सदा ही परमात्मा की आज्ञा में रहते हैं। गुरु पर यह जिम्मेदारी आती है कि जिन आत्माओं को गुरु ने नामदान दिया होता है उन्हें गुरु शान्ति के देश सच्चखंड ले जाएं। गुरु इस दुनिया में ही नहीं बल्कि आगे की दुनिया में भी शिष्य की मदद करते हैं। गुरु का सबसे बड़ा चमत्कार मौत के समय शिष्य की संभाल करना होता है। गुरु अपने वादे के अनुसार शिष्यों को लेने के लिए आते हैं,उन्हें काल के जाल से छुड़वाकर ऊपर के मंडलों में ले जाते हैं।

आप सारी जिंदगी दुनियावी कामों में मेहनत करके धन और शोहरत प्राप्त कर लेते हैं लेकिन अंदर की महान ताकत के लिए भी सावधान हो जाएं कि वह आपके लिए क्या कर रही है। आप एक कदम गुरु की तरफ चलकर देखें, गुरु आपकी तरफ हजार कदम चलकर आते हैं। गुरु से कुछ प्राप्त करने के लिए शिष्य को गुरु के दरबार में **सच्चा भिखारी** बनना पड़ता है। जो गुरु मौत के समय अपने शिष्य की संभाल नहीं करते ऐसे गुरु को दूर से ही सलाम कर देना अच्छा है।

गुरु दोनों जहान के मालिक होते हुए भी अपने आपको गरीब, दास कहकर बयान करते हैं। गुरु हमारी तरह इंसानी जामा धारण करके हमारे

बीच आकर रहते हैं, हमारी तरह खाते–पीते और सोते हैं। हम गरीब आत्माएं उस महान ताकत का अंदाजा नहीं लगा सकती। गुरु के ऊपर गरीबी–अमीरी का कोई असर नहीं होता, वे परमात्मा के भाणें में रहते हैं। सिर्फ गुरु ही हमें काल के जाल से छुड़वाकर सच्चे पिता के पास लेकर जा सकते हैं, जिसके बाद हमारा इस दुनिया में आना–जाना खत्म हो जाता है। आप सच्चे दिल से अभ्यास करके अंदर गुरु के चरणों तक पहुँचे फिर देखें कि गुरु क्या हैं?

मौत के समय जायदाद, पत्नी, बच्चे आपके साथ नहीं जाएंगे। उस समय आपका किया हुआ भजन–अभ्यास और गुरु ही आपके काम आएंगे। हम जीवन में पिछले कर्मों का भुगतान करते हुए शारीरिक और आर्थिक कष्ट भोगते हैं, यह हमारे अपने ही कर्मों का फल है। आप गुरु को याद करें गुरु आपकी अंतरात्मा को मजबूत करेंगे, आपके कष्ट कम करेंगे और मन को स्थिर करेंगे। आपका गुरु के ऊपर जितना ज्यादा विश्वास बढ़ेगा आत्मा की गंदगी उतनी ही साफ होगी। आपका लेन–देन जितनी जल्दी खत्म होगा आपकी धार्मिक चढ़ाई के लिए उतना ही अच्छा है।

पूर्ण सन्त न कोई नया धर्म बनाते हैं और न पहले के बने धर्म को तोड़ते हैं। पूर्ण सन्त अपने शिष्यों से यही कहते हैं कि आप अपने–अपने धर्म और समाज में रहें। हिन्दु को सच्चा हिन्दु, मुसलमान को सच्चा मुसलमान और ईसाई को सच्चा ईसाई बनना चाहिए। हमारी आत्मा युगों–युगों से परमात्मा से बिछुड़ी हुई है, हमें परमात्मा के पास जाने के लिए अपना रास्ता ढूंढ़ना चाहिए, **सच्चा भिखारी** बनना चाहिए।

परमात्मा हर इंसान के शरीर में है लेकिन इंसान इससे अंजान है। लकड़ी के अंदर आग है लेकिन वह उसे नहीं जलाती। हम पूर्ण गुरु की मदद से अंदर जाकर परमात्मा को शरीर में प्रकट कर सकते हैं। जब परमात्मा इस शरीर में प्रकट हो जाएंगे तब परमात्मा इसकी पूरी देख–रेख करेंगे।

काल निरंजन ने बहुत तपस्या और अभ्यास किया, उसके पिता सतपुरुष ने उसकी भक्ति से खुश होकर उसे दुनिया का कार्यभार सौंप दिया। काल कारण और प्रभाव के नियम के अनुसार ही न्याय करता है।

गुरु ने आपको जो पाँच पवित्र नाम दिए हैं, आप उन्हें दोहराकर ध्यान को आँखों के बीच केन्द्रित करें। ध्यान को नौं द्वारों में से निकालकर आँखों के बीच तीसरे तिल पर लाना शिष्य की जिम्मेदारी है, आगे आत्मा को ऊपर लेकर जाना गुरु की जिम्मेदारी है। आँखों का केन्द्र बिन्दु सीमा है, इसके ऊपर गुरु माता के रुप में खड़ा है और नीचे आत्मा बच्चे की तरह खड़ी है।

माता लगातार अपने बच्चे से कह रही है कि बच्चा सीमा पार करके उसके पास आ जाए ताकि वह उसकी देख–रेख कर सके लेकिन बच्चा समझता है कि यह काम करना मुश्किल है। माता कहती है कि जब तक तुम मेरे पास नहीं आओगे मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकती इसी तरह गुरु आशा करते हैं कि आत्मा निडर होकर मन के साथ लड़े और आँखों के केन्द्र बिन्दु तीसरे तिल पर आ जाए ताकि वे उसे आगे लेकर जा सकें।

मन काल का एजेंट है, यह हर एक के अंदर बैठा हुआ अपने मालिक का काम कर रहा है। अगर कोई आदमी सुबह जल्दी उठकर अभ्यास के लिए बैठता है तो काल अंदर से ही उसे सलाह देता है कि अभी सूर्य निकलने में बहुत देर है क्यों न कुछ देर और शरीर को आराम दे दिया जाए फिर भी अगर वह हिम्मत करके अभ्यास में बैठ जाए तो मन अपना दफ्तर खोल लेता है, वहाँ बैठे–बैठे उसे दुनियावी कामों में उलझा देता है।

आत्मा को उलझाने के लिए काल के अलग–अलग तरीके हैं। कोई विरला हिम्मतवाला ही इसके जाल से बचकर निकल सकता है। आपको निरंतर भजन पर बैठना चाहिए चाहे कुछ भी हो मन के आगे हार न मानें। जो इस लड़ाई में सफलता प्राप्त कर लेता है, गुरु पावर उसे ईनाम के रुप में नाम का खजाना देती है, सारे संसार में उसका यश होता है।

जिस तरह मन अपने मालिक का काम पूरी लगन से करता है, उसी तरह शिष्य को भी अपने गुरु का काम पूरी लगन से करना चाहिए। शिष्य को अपना मुख गुरु की तरफ रखना चाहिए। हमेशा गुरु को याद करें, गुरु के बारे में सोचें, गुरु के आगे रोएं। हमने अपना सारा जीवन दुनियावी चीजों के लिए लगा दिया, आप पूर्ण विश्वास रखें कि गुरु हर समय आपके साथ हैं।

ऐसा अक्सर होता है कि जो लोग सन्तों के साथ रहते हैं वे अहंकारी हो जाते हैं और यह भूल जाते हैं कि अभ्यास करना उनके लिए भी जरुरी है, उन्हें भी गुरु के आदेश के अनुसार जीना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि उनके अंदर गुरु को देखने की उत्सुकता कम हो जाती है।

सन्तों के साथ रहना तलवार की नोंक पर रहने के बराबर है। आप सन्तों से तभी फायदा उठा सकते हैं अगर आप लगातार अभ्यास करते रहें। जो प्रेमी दूर से सन्तों के पास आते हैं वे बहुत विनम्र होते हैं, उनके अंदर सन्तों से मिलने की तड़प होती है और वे अपनी कमाई लंगर में डालते हैं। गुरु के पास रहने वाले गुरु को अनदेखा करना शुरु कर देते हैं और अपने आपको विशेष अधिकारी समझकर लंगर का खाना और आश्रम की दूसरी सुविधाएं बिना कोई पैसा दिए हुए ग्रहण करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि उन्होंने जो अभ्यास कमाया होता है वे उसे भी गँवा देते हैं।

भक्ति का मार्ग उनके लिए है जो अपने परिवार, नाम, शोहरत, अच्छी सेहत, सुंदरता, धर्म और अपने देश का अहंकार छोड़कर अपने अंदर नम्रता धारण कर लेते हैं। बल्ख बुखारा एक बादशाह था, उसने अपना राज्य छोड़कर बारह साल तक कबीर साहब की सेवा की। उसे जो भी रुखा–सूखा मिलता वह उसे खुशी से स्वीकार कर लेता।

अहंकार को खत्म करना पहाड़ पर चढ़ने के बराबर है। हम अपने आपको गुरु के चरणों की धूल समझकर गुरु के आगे समर्पित होकर ही गुरु

की दया के पात्र बन सकते हैं। जब शिष्य अभ्यास में बैठता है तो गुरु इस बात से अंजान नहीं होते, गुरु के पास जो कुछ होता है वह शिष्य को दे देते हैं और उसके अंदर परमात्मा के प्रति विश्वास पैदा कर देते हैं।

जिस तरह कोई भिखारी किसी अमीर आदमी के दरवाजे पर माँगने के लिए बैठ जाता है तो अमीर आदमी को पता होता है कि मेरे दरवाजे पर भिखारी बैठा है। उसी तरह परमात्मा हमारा रोना सुनते हैं, हमारी परवाह करते हैं लेकिन हम उनके प्यार को अनसुना कर देते हैं। हम अंजान हैं, हम अंदर जाकर ही देख सकते हैं कि सारा संसार गुरु के आदेश और गुरु की देख-रेख में चल रहा है।

यह दुनिया बहुत बड़ा मायाजाल है, यह दुनिया बुरी नहीं लेकिन आप इसे अपना न समझें। यह दुनिया आपको धोखा देगी, मौत के समय आपका साथ नहीं देगी फिर भी हम इसके साथ जुड़े रहते हैं। जब हम सन्त की शरण में जाते हैं तो हमें मालूम हो जाता है कि यह शरीर तत्त्वों से बना हुआ है, हम इस शरीर को भी यहीं छोड़ जाएंगे। हमारी आत्मा पवित्र थी लेकिन शरीर का साथ लेकर नीचे आ गई फिर मन और इन्द्रियों का साथ लेकर दुनिया में उलझ गई और अपनी पहचान भूल गई।

आप अपने फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करके तीसरे तिल पर लाएं। सिमरन हमारे आगे के सफर का जरूरी कदम है। आमतौर पर सारी दुनिया अपने-अपने सिमरन में लगी हुई है। जैसे किसान अपने खेत व फसलों के बारे में सोचता है। दुकानदार अपने सामान और ग्राहकों के बारे में सोचता है। गृहिणी अपने घर की जरूरतों के बारे में सोचती है। ऐसा कोई नहीं है जो सिमरन में न लगा हो। जब हम पूर्ण गुरु की शरण में जाते हैं तो गुरु हमें समझाते हैं कि आप लगातार नाम का सिमरन करें, अंदर गुरु के पास पहुँचें। सिमरन में बहुत शक्ति है। नामलेवा साहसी और हिम्मती होता है।

हमें हमेशा अपना मन गुरु की याद में लगाए रखना चाहिए, गुरु की याद हमें सुख–दु:ख से बचाएगी और परमात्मा की राह पर चलाएगी।

हर समय गुरु को याद रखें फिर देखें कि अंदरूनी शक्ति किस तरह आपकी मदद करती है। जिस तरह कोई जंगल में गुम हो जाए वह गुरु को याद करे तो अंदरूनी शक्ति उसे रास्ता दिखाती है, यह सिमरन की महानता है। आप लगातार दिन–रात, साँस–साँस के साथ सिमरन करके अपने जीवन के धार्मिक रास्ते को आसान बनाएं।

जिस तरह शीशे के मर्तबान में रखी हुई इलायची या अचार साफ नजर आता है उसी तरह जब शिष्य पूर्ण गुरु के पास जाता है तो गुरु को सब कुछ साफ दिखाई देता है लेकिन गुरु उसे जग जाहिर नहीं करते। गुरु, शिष्य को कमजोरियों से ऊपर उठने के लिए प्रेरित करते हैं, उसके पापों को जानते हुए भी उसके साथ प्यार से पेश आते हैं।

जीवन में गुरु ही सब कुछ देने वाले हैं, खासतौर पर नाम की दौलत। हम नहीं जानते कि हमारी भलाई किसमें है। गुरु के पास कभी न खत्म होने वाली पूँजी है। हम हीरे–मोतियों की जगह पत्थर माँगते हैं, गुरु की दया को नहीं समझते अगर किसी की बीमारी ठीक नहीं होती या कोई कचहरी में केस हार जाता है तो हम गुरु को जिम्मेदार ठहराते हैं कि गुरु ने हमारी मदद नहीं की। जो लोग ऐसी दुनियावी चीजों की चाह रखकर सतसंग में आते हैं उनके लिए बेहतर होगा कि वे अपने घर में ही तशरीफ रखें।

सुख–दु:ख, गरीबी–अमीरी और जन्म–मृत्यु पहले से ही तय है, जैसा बोया है वैसा ही काटना पड़ेगा। अच्छा यही है कि हम अपना लेन–देन अपनी इच्छा से खत्म कर दें। गुरु से गुरु को ही माँगें जिसे गुरु मिल गया उसे सब कुछ मिल गया। गुरु अपने शिष्यों से कुछ नहीं लेते लेकिन छोड़ते भी कुछ नहीं। सच्चा शिष्य दुनियावी कामों में रूचि नहीं रखता और अपनी जमीन–जायदाद को गुरु का ही समझता है। ● ● ●

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मन के किले पर वार

DVD-555(4)

26 जुलाई 1990 कबीर साहब की बानी सेनबार्टन (अमेरिका)

मैं अपने गुरुदेव का धन्यवादी हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर रहम किया। मेरे गुरुदेव ने मुझ पर दया की और मुझे वह शांति बख्शी जो न पैसों से मिल सकती है और न ही हुकूमत से मिल सकती है, हम उसे सिर्फ प्यार से ही प्राप्त कर सकते हैं। हमें पता ही है कि यह दुनिया विषय-विकारों का जंगल है, यहाँ आत्मा परमात्मा से बिछुड़कर भटक रही है अगर कोई भटकी आत्मा को शांति दे दे तो उसका धन्यवाद लफ्जों में नहीं हो सकता, हम अंदर जाकर ही उसका धन्यवाद कर सकते हैं।

आपके आगे कबीर साहब का छोटा–सा शब्द रखा जा रहा है। कबीर साहब मुसलमान जाति के एक छोटे से घराने में पैदा हुए लेकिन हर फिरके के लोग क्या हिन्दू क्या दूसरी जाति के लोग उनके शिष्य बने, राजा महाराजा तक भी उनके शिष्य बने और उनसे अंदरूनी भेद लिया।

सन्तमत कोई समाज नहीं, कोई मजहब नहीं यह अपने आपको सुधारने का मत है। सन्तों के दिल में हर समाज और हर मुल्क के लिए प्यार होता है, वे सब मुल्कों को अपना घर समझते हैं, सब समाजों को अपनी समाज समझते हैं। वे हमें प्यार से यह भी बताते हैं कि यह इश्तिहारबाजी का मत नहीं है बल्कि यह तो परमात्मा से मिलकर खामोश रहने का मत है। गुरु साहब प्यार से कहते हैं:

सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना हे।

सूफी सन्त फरीद साहब भी कहते हैं:

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेनि।
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि।।

सन्त जब भी संसार में आते हैं तो वे कभी यह नहीं कहते कि हम आपके गुरु–पीर हैं या हम आपको रब से मिलवा सकते हैं। वे सब आत्माओं से प्यार करते हैं बुराई मन में होती है लेकिन सन्तों की नजर आत्मा पर होती है। वे कहते हैं कि हम आपके सेवादार हैं, आप हमें अपना सेवादार समझ लें या बड़ा भाई समझ लें, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन वे यह जरूर कहते हैं कि हम आपको जो रास्ता बताते हैं, आप उस पर चलकर अंदर जाकर सच्चाई को खुद आँखों से देखें।

महात्मा न तो हमारे धर्म का परिवर्तन करते हैं और न ही किसी खास किस्म का लिबास पहनना बताते हैं बल्कि वे तो यह कहते हैं कि शरीर आत्मा का एक खोल है, आप इस पर जो मर्जी लिबास पहन लें, इसका अंदर की आत्मा से कोई ताल्लुक नहीं है।

किसी ने कबीर साहब से पूछा कि आप दुनिया को क्या समझते हैं? कबीर साहब ने कहा, ''यह दुनिया एक मैदान–ए–जंग है, यहाँ दो प्रकार की लड़ाई होती है। एक लड़ाई जर और जोरू के पीछे हो रही है और दूसरी मानसिक लड़ाई है जिसे सन्त–महात्माओं ने खुद लड़कर उस किले पर फतेह की होती है। सन्त अपने सेवकों को भी उसी लड़ाई में लगा देते हैं कि अंदर जाकर आपने पाँच डाकुओं–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को जीतना है।''

आप प्यार से कहते हैं कि त्रेता युग में जोरू के लिए लड़ाई हुई, रावण सीता को अच्छी हुस्न वाली समझकर चुराकर ले गया। रामचन्द्र जी महाराज ने अपनी पत्नी को रावण के पंजे से छुड़वाने के लिए बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी जिसमें बहुत लोगों का नुकसान हुआ।

द्वापर युग में कौरवों और पांडवों के बीच जर के पीछे लड़ाई हुई जिसे आम दुनिया महाभारत के रूप में जानती है। श्रीकृष्ण जी महाराज ने दुर्योधन से कहा, ''तुम पांडवों को पाँच गाँव दे दो, ये अपनी गुजर–बसर कर लेंगे और तुमसे कुछ नहीं मांगते।'' दुर्योधन ने कहा, ''जितनी जमीन सुई की नोक के नीचे आती है मैं इन्हें उतनी भी जमीन देने के लिए तैयार नहीं हूँ, पाँच गाँव तो बहुत दूर की बात है।'' इस कारण बहुत विनाशकारी लड़ाई हुई, उस लड़ाई ने हिन्दुस्तान की ऐसी कमर तोड़ी कि अभी तक हिन्दुस्तान उतना मजबूत नहीं हुआ।

मानसिक लड़ाई अपने मन से करनी है। महात्मा हमें बताते हैं कि बाहर हमारा कोई इतना खतरनाक दुश्मन नहीं जितना कि हमारा मन हमारे अंदर बैठा है अगर हम मन को जीत लेते हैं तो दुनिया को पैदा करने वाले को ही जीत लेते हैं, वश में कर लेते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँच हैं, आत्मा अकेली है। सन्त हमें शब्द–धुन से लैस कर देते हैं और बताते हैं कि किस तरह इन्हें फतेह करना है। गुरु का दया भरा हाथ भी हमारे सिर पर होता है।

कबीर साहब इस शरीर को एक किला कहकर ब्यान करते हैं। आप प्यार से बताते हैं कि मैंने किस तरह इस किले को फतेह करके अविनाशी राज्य को हासिल किया जो कभी नाश नहीं होता और मैं शांति के देश पहुंच सका।

किउ लीजै गढु बंका भाई, दोवर कोट अरु तेवर खाई।

कबीर साहब प्यार से बताते हैं कि हम पुराने जमाने के बने हुए किले देखते हैं। कई मजबूत किलों की दो–दो दीवारें भी हैं अगर दुश्मन एक दीवार फतेह कर ले या तोड़ दे तो दूसरी दीवार बचाव कर सकती है। इसी तरह इस शरीर रूपी किले की भी दो दीवारें हैं– राग और द्वैत। राग का मतलब रागों के आशिक और द्वैत का मतलब किसी से द्वेष करना। जिस तरह किले के चारों तरफ नाली होती है उसी तरह इस शरीर रूपी किले के चारों तरफ भी सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण की नाली होती है, जिन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव को भी अपने वश में कर रखा है। उस नाली को कैसे पार किया जा सकता है? उस किले के दरवाजे पर दो पहरेदार सुख और दुख हैं।

आप सभी कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ते हैं। काल ने सतपुरुष की भक्ति करके आत्माओं को मांग लिया। काल ने इन आत्माओं को तन और मन का पिंजरा लगाकर कैद कर लिया और इनके घर सचखण्ड की याद भुला दी। काल ने पहले सत्तर युग फिर चौंसठ युग सतपुरुष की भक्ति की। गुरु नानक देव जी महाराज कहते हैं:

गुपते बूझहु जुग चतुआरे।

यह भी एक अंदाजा है, हो सकता है इससे भी ज्यादा समय भक्ति की हो। जिसने इतनी मेहनत करके आत्माएँ माँगी हैं, वह अब इन्हें इतनी आसानी से आजाद नहीं होने देता। उसने यह शरीर सिर्फ हड्डी और चमड़ी का ही नहीं बनाया बल्कि इसके अंदर जाकर देखते हैं तो पता चलता है कि इसके अंदर कितनी ताक़तें रखी हुई हैं, कितनी मजबूत फौजें रखी हुई हैं। वह ताक़तें इतनी ताकतवर हैं कि हम न तो इन्हें पढ़ाई से जीत सकते हैं और न ही किसी और तरीके से जीत सकते हैं। सिर्फ गुरु की दया-मेहर और सिमरन की शक्ति से ही हम इन पर फतेह प्राप्त कर सकते हैं।

पाँच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ।

कबीर साहब कहते हैं कि मन ने बहुत ही मुक़ाबले वाली फौजें रखी हुई हैं। अंदर पाँच सेनापति-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रखे हुए हैं और पच्चीस प्रकार की बहुत ही जबरदस्त प्रकृतियाँ रखी हुई हैं।

जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ।

कबीर साहब अपने आपको बहुत ही छोटा, गरीब और यतीम कहकर ब्यान करते हैं कि हे परमात्मा, मैं गरीब हूँ, यतीम हूँ ये बहुत बड़े सूरमे हैं, इन्होंने माया का जाल बिछाया हुआ है। मैं इनके साथ कैसे लड़ सकता हूँ। आप इस तरह मेरी मदद करें जिस तरह आपने रामचन्द्र जी की मदद की थी, राक्षसों को मारा था ताकि मैं भी इन पाँच राक्षसों को मार सकूँ।

जब मेरे गुरुदेव ने मुझे जमीन के अंदर एक छोटा-सा मकान बनाकर दिया और मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''देख भई, आँखें अंदर खोलनी है, बाहर नहीं खोलनी।'' उस समय इस गरीब आत्मा की आँखों से पानी निकला और मैंने कहा, ''आपने मेरा पर्दा रखना है, मेरी मदद करनी है।'' महाराज जी ने प्यार से कहा, ''देख भई, जहां शिष्य को गुरु भाग्य से मिलते हैं वहीं गुरु को भी अच्छा शिष्य भाग्य से मिलता है। मैं

सदा ही तुम्हारी रक्षा करूंगा।'' उन्होंने सदा ही अपना वादा निभाया, वे सदा ही वहाँ पहुँचते रहे।

कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुँनु दरवाजा।

अब आप प्यार से कहते हैं कि उस किले में दाखिल होने के लिए बड़े–बड़े दरवाजे हैं जिनमें एक खिड़की है। जिस तरह 16 पी. एस. आश्रम में बड़े–बड़े दरवाजे हैं और उनमें एक खिड़की है। हम उन बड़े दरवाजों को बंद कर देते हैं लेकिन वह खिड़की खुली रख लेते हैं ताकि आने–जाने वाले उसमें से गुजर सकें और पूरा दरवाजा न खोला जाए। पाप–पुण्य दो दरवाजे हैं और दुख–सुख उसके पहरेदार हैं।

कबीर साहब बताते हैं कि इस काया रूपी दरवाजे में किस तरह दाखिल होना है, इस दरवाजे में एक खिड़की है, वहाँ पाप–पुण्य दो दरवाजे लगे हुए हैं। दुखों को कोई नहीं मांगता और सुख में आकर इंसान परमात्मा को भूल जाता है। यह भी उस मन की एक फौज है, कभी हमारे पीछे दुख लगा दिया तो कभी सुख लगा दिया।

क्रोधु प्रधानु महा बड दुँदर तह मनु मावासी राजा।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि जब हम अंदर चले जाते हैं तो आगे मन की फौजें हैं, क्रोध उनका बड़ा जबरदस्त प्रधान सेनापति है। वह जब किसी को आते हुए देखता है तो अंधेरा कर देता है कि इसे पता न चले कि अंदर कौन बैठा है।

मैं सदा ही सतसंग में बताया करता हूँ कि क्रोध से दृष्टि धुंधली हो जाती है, क्रोध इंसान के शुभ गुणों को चबा जाता है। जब कोई प्रेमी अभ्यास करके अंदर जाता है तो इन सेनापतियों से मुक़ाबला करना पड़ता है। प्यारेयो, मन अंदर इन्हें हुक्म देता है कि आप इससे लड़ें, इनमें से कोई न कोई हमारे पीछे पड़ जाता है।

कबीर साहब कहते हैं कि कामी, क्रोधी और लालची भक्ति नहीं कर सकते, कोई सूरमा–बहादुर ही भक्ति कर सकता है। काम से आत्मा नीचे गिर जाती है, चढ़ाई के काबिल नहीं रहती। जहां काम है वहाँ नाम प्रकट नहीं होता। इसी तरह क्रोध से हमारे ख्याल फैल जाते हैं और लालची आदमी तो इस तरफ आ ही नहीं सकता।

स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढ़ाई।

कबीर साहब कहते हैं कि मन ने अपना बहुत बचाव किया हुआ है, दुनिया के स्वाद लगा रखे हैं और उन स्वादों का एक मजबूत हेलमेट पहना हुआ है जिस तरह मोटर साइकिल चलाने वाले पहनते हैं। स्वादों में पड़ा हुआ जीव सब–कुछ भूल जाता है। तरकश भ्रष्ट बुद्धि के तीरों से भरा हुआ है अगर कोई सूरमा वहाँ मजबूत होकर जाता भी है तो वह उसकी बुद्धि को खोटी कर देता है।

कबीर साहब ममता के बारे में बताते हैं कि गाँव का कोई आदमी शहर में चला गया, उसे वहाँ रहते हुए काफी समय हो गया। एक दिन उसे उसके गाँव का कोई आदमी मिला, उसने उससे पूछा कि गाँव की राज़ी–खुशी बताओ। वह आदमी बताता है कि गाँव में बाढ़ आई हुई है, फलां आदमी मर गया है, फलां आदमी का घर तबाह हो गया है, फलां आदमी के बच्चों के साथ बुरा हो गया है। वह सब–कुछ आराम और प्यार से सुनता रहा लेकिन जब उसे यह बताया कि तुम्हारा घर भी बह गया है तो वह रोने लगा और सिर के बाल नोचने लगा क्योंकि उसे अपने मकान से ममता थी, ममता ऐसी चीज़ है।

जब मेरी उम्र पंद्रह साल की थी तो हम दस–बारह बच्चे खेल रहे थे। शाम का समय था हमारे गाँव में आग लग गई। हम लोग गाँव से पाँच–छह सौ कदम की दूरी पर थे। हमारे दिल में ख्याल आया कि चलो भई, चलकर आग बुझाएंगे। हमारा चाचा भी वहीं था, वह कहने लगा कि लोगों

के घर जल रहे हैं तो जलने दो। जब थोड़ी देर बाद पता चला कि आग मेरे चाचा के घर में ही लगी है तो वह आग बुझाने नहीं गया बल्कि कुएं की तरफ चल पड़ा कि मैं कुएं में गिर कर मर जाता हूँ क्योंकि घर को आग लग गई है तो क्या बचा होगा। आप सोचकर देख लें, खुद के सामान से ममता होती है, दूसरे का चाहे कितना भी नुकसान हो जाए। इस तरह मन ममता जगा देता है।

मन ने बहुत मजबूत कोट भी पहना हुआ है जो कि तारों का बना हुआ है अगर कोई अंदर जाता है तो उसके लिए वह कोट तोड़ना बहुत मुश्किल होता है। अगर कोई सूरमा नाम की शक्ति लेकर अंदर जाता है तो वह गुरु के सहारे रूपी छूरी लेकर उसे काट देता है और कामयाब हो जाता है।

तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई।

कबीर साहब बहुत प्यार से कहते हैं कि देखो प्यारेयो, मैं आपको मन के हथियार बता रहा हूँ, उसके तरकश में तृष्णा के बहुत मजबूत तीर हैं। जब तृष्णा का तीर लगता है तो:

लख जोड़े करोड़ जोड़े मन परे परे को होड़े रे।

एक सेवक किसी सन्त की रोज सेवा किया करता था, उसके दिल में तृष्णा थी अगर सन्त दयाल हुए तो उसे कुछ न कुछ देंगे। एक दिन उसने विनती की महाराज जी, परिवार चलाना बहुत मुश्किल है, आप कुछ दें। सन्त ने दयालु होकर उसे चार मोमबत्तियाँ दे दी और कहा कि जहां जाकर मोमबत्ती बुझ जाए वहाँ जमीन खोदना, वहाँ जो मिल जाए उस पर सब्र करना और किसी भी तरफ मत जाना।

सेवक ने वैसा ही किया वह एक मोमबत्ती जलाकर एक दिशा में चल पड़ा। जहां जाकर मोमबत्ती बुझी, वहाँ उसने जमीन खोदी तो वहाँ से उसे चाँदी के रुपयों से भरा हुआ बर्तन मिला। तृष्णा कभी नहीं मिटती उसके

दिल में ख्याल आया कि दूसरी दिशा में भी जाना चाहिए। जब वह दूसरी दिशा में गया तो जहां मोमबत्ती बुझी वहाँ खुदाई करने पर सोने की मोहरें मिलीं, उसने वह निकाल लीं लेकिन तृष्णा फिर भी नहीं मिटी। अब वह तीसरी दिशा में चल पड़ा, जहां जाकर मोमबत्ती बुझी वहाँ उसने जमीन खोदी तो वहाँ से उसे कीमती सामान मिला। उसके दिल में ख्याल आया कि चौथी दिशा में कोई खास चीज़ होगी, मुझे उधर भी जाना चाहिए।

जब वह चौथी दिशा में गया, जहां मोमबत्ती बुझी वहाँ जमीन खोदकर देखी तो नीचे एक दरवाजा था, वह उसमें दाखिल हुआ। आगे एक इंसान के सिर पर छत का वजन था। इसने उस इंसान से पूछा प्यारेया, यहाँ कोई माया का खजाना है तो मुझे बता? उस इंसान ने कहा कि मैं बता तो सकता हूँ लेकिन मेरे सिर पर छत का वजन है अगर तुम इस छत के नीचे अपना सिर दो तो मैं भार से आजाद होकर तुम्हें बता सकता हूँ। जब इस सेवक ने छत के नीचे अपना सिर दिया तो उस इंसान ने कहा, देख भई प्यारेया, मैं भी तेरी तरह तृष्णा का मारा यहाँ आया था। अब जब तुमसे भी बड़ा कोई लालची आदमी आएगा तो वही तुम्हें आजाद करेगा।

बाबा बिशन दास जी ऐसे आदमियों की एक बहुत ही दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे। एक पंडित ने एक बिल्ली पाली हुई थी और उसे ऐसी ट्रेनिंग दी हुई थी कि पंडित उसके सिर पर जलता हुआ दीपक रख देता था। जब तक कथा समाप्त नहीं होती थी तब तक वह बिल्ली इधर–उधर कहीं भी नहीं जाती थी। हमें पता ही है कि संसार में भोले लोग बहुत होते हैं इसलिए सब तारीफ करने लगे कि जानवर भी पंडित जी के हुक्म में हैं, यह बिल्ली चुपचाप बैठी रहती है।

संसार में भोले लोगों के साथ चतुर लोग भी होते हैं। एक चतुर इंसान पिंजरे में चूहा कैद करके कथा में जा बैठा, उसने पिंजरे के ऊपर कपड़ा डाल दिया। श्रोता कभी आँखें खोलते थे और कभी आँखें बंद करते थे

समय देखकर चतुर आदमी ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। जब बिल्ली ने चूहा देखा तो उसने झपट्टा मारा, दीपक का तेल गिर गया, सारे लोग परेशान हो गए कि आज क्या हो गया, पहले तो बिल्ली कभी इधर-उधर नहीं हुई? उस चतुर आदमी ने कहा, ''देखो प्यारेयो, जब तक बिल्ली ने चूहा नहीं देखा था यह तब तक ही भक्त थी, जब इसने चूहा देख लिया तो इसका भक्ति भाव दूर चला गया।''

प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ।

कबीर साहब कहते हैं कि बेशक काल और मन ने अंदर जबरदस्त फौजें बिठाई हुई हैं, ये किसी आत्मा को अंदर नहीं जाने देते लेकिन कोई ऐसा भी सूरमा होता है जिसने मैदान-ए-जंग को जीता होता है।

आप कहते हैं कि मैंने आत्मा को उस 'शब्द' के साथ जोड़ दिया। सतगुरु ने जो ज्ञान की शक्ति दी थी, मैंने वह गोला दाग दिया। जिस तरह हम पहाड़ में पलीता रख देते हैं तो वह पलीता बड़े-बड़े पहाड़ों को उड़ा देता है उसी तरह मैंने ऊपर चढ़कर उन फौजों के ऊपर 'शब्द-नाम' का गोला चलाया जो इस किले में लड़ रही थी।

ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ।

आप कहते हैं कि उसमें से ज्ञान की अग्नि निकली। जो पाँच डाकू लड़ रहे थे वे एक ही चोट से भागने लगे, मैंने ऊपर से देखा कि इनके अंदर घबराहट पैदा हो गई है तब मैंने अपनी फौज शील, क्षमा, संतोष और दीनता से कहा कि इन्हें यहीं काबू कर लें अब ये भाग न जाएं।

सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा।
साधसंगति अरु गुर की कृपा ते पकरिओ गढ को राजा।

कबीर साहब परम सन्त थे, वे अपने गुरु का बहुत आदर करते हैं। कबीर साहब सतसंग और सिमरन पर बहुत ज़ोर देते हैं और कहते हैं कि

मैंने साध–संगत और गुरु की कृपा से इस किले के राजा मन को काबू कर लिया है। आप कहते हैं:

मन के हारे हार है मन के जीते जीत।
कह कबीर पिउ पाइये, मनहीं की परतीत।

मन के हारने से ही हार है और मन के जीतने से ही जीत है। आप कहते हैं कि उस पारब्रह्म या अनहद शब्द को हम मन की प्रतीत से ही पा सकते हैं। मन जैसा कोई दुश्मन नहीं अगर हम मन को समझाकर वापिस इसके घर ब्रह्म में ले जाएँ तो मन जैसा कोई मित्र भी नहीं है।

भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी।

आप कहते हैं कि परमात्मा की शक्ति और सिमरन के साथ, काल ने जो फंदे लगाए हुए थे, मैंने उन सब पर फतेह प्राप्त कर ली।

दासु कमीरु चड़िओ गड़्ह ऊपरि राजु लीओ अबिनासी।

कबीर साहब कहते हैं कि मैं गढ़ के ऊपर चढ़ गया और कभी भी नाश न होने वाला सचखण्ड का राज्य प्राप्त किया।

कबीर साहब ने सिमरन और सतसंग पर बहुत ज़ोर दिया है। आप प्यार से कहते है कि फैले ख्याल को सिमरन करके इकट्ठा करना है और नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे तीसरे तिल पर आना है, ब्रह्म और पारब्रह्म में जाना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गांठ आँखों के पीछे और सूक्ष्म त्रिकुटी में है।

जब हमारी आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के सारे पर्दे उतर जाते हैं तो हमारी आत्मा जो परमात्मा से बूंद बनकर बिछड़ी थी, जिसने ठोकरें खाकर बहुत दुख पाए और कई जन्म धारण किए, वह जाकर उसी जगह परमात्मा में समा गई। उसे वहाँ जाकर परमात्मा का वह राज्य मिल गया जिसका कभी भी नाश नहीं होता। ❋❋❋

फौजी जीवन

सन्त अजायब ने बचपन में ही बता दिया था कि मैं अपना गुजारा स्वयं करूँगा। आप अपनी माता से आज्ञा लेकर घर से निकले, यह वह समय था जब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। फौज की भर्ती चालू थी अत: युवक अजायब ने फौज में भर्ती होने का निश्चय किया और आप भर्ती होने वालों की कतार में खड़े हो गए। यह वह जमाना था जब लोग बीस वर्ष की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन फौज में जाना पसंद नहीं करते थे।

अजायब एक उत्साही युवक थे, भर्ती करने वाला अफसर इस युवक से बहुत प्रभावित हुआ और उसने पीठ ठोककर युवक को शाबाशी दी। युवक अजायब की छोटी अवस्था देखकर दूसरा अधिकारी कुछ कहने ही वाला था कि भर्ती अफसर ने अजायब को भर्ती होने वाले युवकों की लाइन में खड़े होने का संकेत दिया और अजायब फौज में भर्ती हो गए।

फौजी सन्त

युवक अजायब फौज में भर्ती हो गए लेकिन आप अन्य युवकों से अलग ही रहे। यहाँ भी आपको मृत्यु का रहस्य तंग करता रहा, आप बड़ी लगन से अभ्यास करते रहे। धीरे–धीरे यह बात आपके अन्य साथियों को मालूम हो गई और आपके साथी आपको बहुत श्रद्धा से देखने लगे, सभी आपको सन्त कहकर आपका आदर करने लगे।

शुरू–शुरू में आपको बहुत कठिनाइयाँ आईं क्योंकि फौजी आजाद किस्म के लोग होते हैं लेकिन आप अनुशासन के पक्के थे। आपके व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण आपके अफसर भी आपको बहुत श्रद्धा और प्यार से देखते थे।

फौज में परेड

शुरू-शुरू में फौजी परीक्षण बहुत कठिन होता है। परीक्षण काल में फौजियों को बहुत कठिन व्यायाम करने पड़ते हैं, फौजियों को रोजाना परेड करनी पड़ती है। युवक अजायब भी परेड में शामिल होते थे। आपका एक पंजाबी अफसर बहुत सख्त था वह परेड करती हुई पलटन पर बहुत कड़ी नजर रखता था। आप परेड के समय भी हे राम, हे गोबिंद का जाप जारी रखते। सिमरन आपकी जुबान पर चढ़ चुका था, आप सिमरन में इतना खो जाते कि सुध-बुध ही भूल जाते।

एक बार परेड हो रही थी, फौजी युवकों को मुँह से 'लेफ्ट-राइट', 'लेफ्ट-राइट' बोलना पड़ता था लेकिन आप सिमरन में इतना खोए हुए थे कि आपकी जुबान से केवल हे राम, हे गोबिंद निकल रहा था। आपका अफसर क्रोधित हुआ उसने आपको अकेले ही परेड करने के लिए कहा।

अब आप अकेले ही परेड करने लगे तो आपके मुँह से हे राम, हे गोबिंद ही निकल रहा था। आपका पंजाबी अफसर आप पर बहुत खफा था। उसी समय वहाँ सेना का एक बड़ा अंग्रेज अधिकारी आ गया। अंग्रेज अधिकारी ने पंजाबी अफसर से पूछा, ''यह जवान क्या बोल रहा है?'' पंजाबी अफसर ने बताया, ''सर, यह परमात्मा का नाम ले रहा है, यह जवान साधु प्रवति का है, सदा भगवान का नाम ही जपता रहता है।''

अंग्रेज अफसर बहुत खुश हुआ, उसने कहा, ''यह युवक उम्र में मुझसे छोटा है लेकिन मुझे अपने पिता की तरह महसूस हो रहा है।'' उस अफसर ने बहुत श्रद्धा से आपकी तरफ देखा, अपने दोनों हाथ जोड़े और आपकी परेड माफ कर दी।

सन्त अजायब बताया करते थे, ''उसके बाद मुझे अपने जप के लिए और भी अधिक समय मिलने लगा।''

धार्मिक अजायब

युवक अजायब सिख परिवार में पैदा हुए थे, आप सिख समाज के नियमों का बहुत कड़ाई से पालन करते रहे। आपको शुरू से ही गुरुद्वारों और गुरु-ग्रन्थ साहब पर बहुत श्रद्धा थी। इस सम्बन्ध में आप बताया करते थे, ''मैंने एक मिस्त्री से टीन का एक छोटा सा गुरुद्वारा बनवाया, उसके अंदर गुटखा भी रखा, जिसे मैं सदा अपनी पीठ के पीछे रखता था। दिन में दो बार धूप भी जलाया करता था।''

फौजी जीवन में यह सब निभाना बहुत कठिन है लेकिन मैंने यह सब कुछ बहुत प्रेम-प्यार से किया। जब मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में पहुँचा, आपने कहा, ''अरे भले आदमी! सच्चा गुरुद्वारा तो तेरा शरीर है।'' उन्होंने प्रभाती राग का यह शब्द मेरे सामने रखा:

हरि मंदरू एहु सरीरू है गिआनि रतनि परगटु होइ।

यह पढ़कर मैंने गर्दन नीचे झुका ली। उन्होंने छड़ी से मेरी गर्दन ऊपर उठाई और कहा, ''नीचे क्या देखता है?'' फिर मेरी तरफ छड़ी करके कहा, ''इस मंदिर में जाना है, इस मंदिर की इज्जत करनी है।''

फौजी जीवन में कठिनाइयां

फौज में कई तरह के लोग होते हैं। ज्यादातर लोग आजाद ख्यालों के होते हैं इसलिए आप जैसे धार्मिक व्यक्ति के लिए कठिनाइयों का आना स्वाभाविक ही था। आप अपने फौजी जीवन की कठिनाइयां इस तरह बताया करते थे, ''लोग मुझे सिनेमा देखने के लिए प्रेरित किया करते थे लेकिन मैं उनकी इस बात को स्वीकार नहीं करता था। प्रत्येक आदमी सिनेमा की प्रशंसा करता था लेकिन उसके दुर्गुण कोई नहीं बताता था।''

शराब पीने वाले शराब की बड़ाई किया करते थे, कोई यह नहीं कहता था कि शराब बुरी चीज है। इसी तरह माँस खाने वाले माँस के फायदे

बताकर माँस खाने के लिए प्रेरित करते कि माँस खाने से शक्ति बढ़ती है। मैं उनसे कहता, ''अगर आप शक्तिशाली हैं तो मेरे साथ दौड़ लगाएं, मैं फौज में दौड़ लगाया करता था।''

मैं कई बार उन लोगों से विनती किया करता कि भाईयो, आप शोर न करें, मैं अभ्यास कर रहा हूँ। वे बहुत जोर से शोर मचाकर मुझे तंग करने की कोशिश करते लेकिन मैं उनकी तरफ ध्यान नहीं देता था, मैं अपने जाप में मगन रहता।''

मुझे याद है कि शुरू–शुरू में वे लोग शराब पीकर मेरे बिस्तर पर उछल–कूद मचाया करते लेकिन जब उन्हें यह पता चला कि मैं उनकी हरकतों को पसंद नहीं करता, परमात्मा की भक्ति करता हूँ तो उन्होंने मुझे तंग करना बंद कर दिया। हम सब लोग एक बहुत बड़ी बैरक में रहा करते थे। कुछ दिनों बाद जब उन लोगों ने महसूस किया तो वे शराब पीकर बैरक में आने का साहस नहीं करते थे अगर हम सच्चे दिल से भक्ति करते हैं तो परमात्मा अवश्य हमारी मदद करते हैं।

इस तरह आपको फौजी जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन आप कभी हताश नहीं हुए, आपने सदा उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की।

फौजी परीक्षाएं

युवक अजायब कम पढ़े–लिखे थे लेकिन आप बहुत परिश्रम और लगन से प्रगतिपथ पर आगे बढ़े। आप साधारण सिपाही से उन्नति करते हुए वायरलैस ऑपरेटर के पद पर पहुँचे। उस समय इस पद पर पहुँचने के लिए हाई स्कूल पास होना आवश्यक था अत: आपको कई परीक्षाएं देनी पड़ी। आप सदा ही अपनी परीक्षाओं में प्रथम आया करते थे। आप अपने उस्तादों की बहुत इज्जत करते थे और आपके उस्ताद भी आपकी इज्जत करते थे।

दौड़

फौज में सन्त अजायब फर्स्ट पटियाला रेजीमेंट में थे। आप दौड़ में भाग लिया करते थे। आपने दौड़ में कई मुकाबले जीते थे। आप कहा करते थे, ''मैं दौड़ लगाया करता था, मेरे मन में कभी यह ख्याल नहीं था कि कोई मुझसे आगे निकल जाएगा। मैं ऊँची छलांग लगाया करता था, मुझे दौड़ाक के तौर पर इंग्लैंड जाने का मौका भी मिला।'' आपने ऐसे मुकाबलों में कई इनाम जीते थे।

एक बार आपकी रेजीमेंट सीमाप्रान्त नौशहरा छावनी में थी। वहाँ एक दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। आपका कद छोटा और शरीर काफी पतला था। वहाँ पठानों की बटालियन के लोगों ने सुन रखा था कि फर्स्ट पटियाला में एक सिख सिग्नेलर है जो बहुत तेज दौड़ाक है, आज उसे देखने का मौका मिलेगा। उनमें एक पठान भी था जो दौड़ लगाया करता था। वह पठान बड़ा मजबूत था उसने बहुत माल खाया हुआ था।

जब दौड़ लगाने वालों की कतारें लगी तो वह पठान अजायब के पास ही खड़ा था, उसने आपसे पूछा, ''अजायब सिंह तुम्हारा ही नाम है?'' अजायब ने कहा, ''हाँ।'' उसने कहा, ''क्या खाते हो दाल-रोटी, अन्न के साथ अन्न खाते हो?'' उसने और भी कई मजाक किए लेकिन आप चुप रहे। उसने कहा, ''मेरा दिल करता है कि मैं तुम्हें बगल में दबाकर दौड़ लगाऊं।'' आपने कहा, ''कोई बात नहीं यह तो वक्त ही बताएगा।''

दौड़ शुरू हुई। पठान ने अपनी पलटन से कहा, ''फिक्र न करो।'' अजायब की पलटन का साहब भी साथ-साथ ही चल रहा था क्योंकि दौड़कर मैदान के चक्कर लगाने थे। जब आखिरी चक्कर आया तो आपने उस पठान को काफी पीछे छोड़ दिया और आप दौड़ में प्रथम आए जबकि वह पठान सबसे पीछे रह गया।

आप बताया करते थे कि एक साहब ने मुझसे कहा कि शराब पीने से हौंसला बढ़ता है। तब मैंने उस साहब से कहा कि आपके हौंसले का तब पता चलेगा जब आप लड़ाई में मुझसे आगे निकल जाएंगे। हौंसला भी अंदर ही होता है। जो नशा नहीं करेगा उसका दिमाग ठीक रहेगा और दिल मजबूत होगा। आत्मा की खुराक भजन–सिमरन है।

सरबण से प्यार

आपकी पलटन में सरबण नाम का एक लांगरी हुआ करता था। पलटन के लोग उसकी शिकायत किया करते थे कि आज इसने रोटी ठीक नहीं दी, रोटियाँ जली हुई थी, दाल ठीक नहीं बनी, दाल में नमक ज्यादा था। सरबण उन लोगों से बहुत दुःखी था। अजायब चुपचाप लंगर में जाते, जैसा मिलता खाकर चले आते।

सरबण ने एक–दो बार जानबूझकर आपको खराब दाल और जली हुई रोटियाँ दी। आपने चुपचाप भोजन कर लिया। एक दिन सरबण ने अजायब से कहा, ''सन्त जी, आपने साहब से कोई शिकायत तो नहीं की?'' आपने बड़े प्यार से कहा, ''भाई, जो तुम्हारी शिकायत करते हैं क्या तुम उन्हें अच्छा समझते हो? मैं किसी की शिकायत नहीं करता। सभी लोग अच्छे होते हैं, मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं।''

सरबण ने कहा, ''सन्त जी, आपको लंगर में आने की जरूरत नहीं। आपका फुल्का, चाय आपकी चारपाई पर ही पहुँच जाया करेगा।'' सरबण का फौज में 3212 नम्बर था इसलिए आप उसे 3212 कहकर बुलाते थे। आपने कहा 3212 तुम क्यों तकलीफ करोगे? उसने कहा, ''सन्त जी, आपकी सेवा करने को मेरा जी चाहता है।'' इस प्रकार सरबण आपकी सेवा करने लगा। वह नित्य प्रातः ही चाय लेकर आपके पास पहुँच जाता।

जब सरबण सुबह चाय लेकर आता तो आप उसे प्यार से कहा करते, ''भाई 3212 तुम मेरी बहुत सेवा करते हो, तुम्हारी शादी हो जाए और

तुम्हें ऐसी पत्नी मिले जो तुमसे चाय बनवाया करे।'' सरबण काले रंग का था और उसकी शक्ल भी खूबसूरत नहीं थी। वह कहता, ''सन्त जी, कोई अपनी बेटी से तो मेरी शादी नहीं करेगा अगर कोई भागी हुई औरत पीछे से ही लड़की साथ लाई हो तो भले ही उससे मेरी शादी हो जाए।'' इस तरह दोनों में दिल्लगी चलती रही।

सन्त अजायब ने फौज की नौकरी छोड़ दी, सरबण भी नौकरी छोड़कर अपने गाँव चला गया। सरबण की अच्छी जमीन-जायदाद थी, उसकी शादी भी हो गई। सरबण के गाँव के एक मिस्त्री के साथ आपकी जान-पहचान थी। वह मिस्त्री आपसे मजाक में कहता, ''आप शराब के खिलाफ हैं, भला फौज में रहकर भी कोई शराब के बिना रह सकता है। मैं इस बात को नहीं मानता।'' आखिर बातों-बातों में सरबण का जिक्र आया तो मिस्त्री ने कहा कि सरबण तो इसी गाँव में रहता है। मिस्त्री ने सोचा जब सरबण आएगा तो सन्त जी की पोल खुल जाएगी। मिस्त्री ने सरबण को बुलाने के लिए अपने लड़के को भेजा।

उधर सरबण की शादी वास्तव में ऐसी औरत से हुई जो सचमुच ही उससे चाय बनवाया करती थी। वह कभी-कभी परेशान होकर कहा करता था, ''मैंने फौज में एक सन्त की सेवा करके तुम्हें पाया है। वह सन्त कहा करते थे कि तुम्हें ऐसी पत्नी मिले जो तुमसे चाय बनवाया करे।'' जब सरबण के पास मिस्त्री का लड़का पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी से कहा कि आज वह सन्त आए हैं जिनकी सेवा करके मैंने तुझे पाया है। सरबण की पत्नी के मन में सन्त अजायब के प्रति बहुत श्रद्धा थी क्योंकि सरबण ने उसे आपके बारे में कई बातें बता रखी थी।

सरबण सन्त जी से मिलने के लिए दौड़ पड़ा। उसके मन में सन्त जी की बहुत इज्जत थी, उसने दूर से ही अपने जूते उतार दिए और सन्त अजायब के चरणों में जाकर गिर पड़ा। सन्त अजायब ने उसे पकड़कर

अपने गले से लगाया। दोनों मित्र मिलकर गदगद हो गए, मिस्त्री अवाक होकर देखता रहा।

सरबण, सन्त जी को अपने घर लेकर आया। उसकी पत्नी ने पहले से ही सन्त जी के बैठने के लिए जगह तैयार कर रखी थी। उसने भी सन्त अजायब की श्रद्धा से चरण वंदना की। आपने उसकी पत्नी से पूछा, ''सुनाओ भाई, तुम्हारी गृहस्थी का क्या हाल है?'' इस पर उसकी पत्नी ने कहा कि चाय तो रोज यही बनाता है, मैं कभी-कभी इससे रोटी भी बनवा लेती हूँ।

सेना में चोरी

एक बार सेना में बंदूकों की चोरी हुई, यह सब पहरेदारों की लापरवाही व मिलीभगत से हुआ। चोरी का पता नहीं चल रहा था। आपकी पलटन का कमांडर बहुत परेशान था, बहुत लोगों को सजा मिलने जा रही थी, जिसमें कुछ निर्दोष भी थे।

आखिर कमांडर ने एक युक्ति सोची। उस समय फौज में सभी लोग आपको सन्त जी कहते थे। आपकी सच्चाई के कारण सभी आपको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। कमांडर ने सन्त जी को अपने पास बिठा लिया और वहाँ के लगभग पन्द्रह सौ जवानों से कहा कि आपको अपनी सच्चाई का प्रमाण देना है। प्रत्येक जवान सन्त जी को हाथ लगाकर कहे कि मैंने चोरी नहीं की। प्रत्येक जवान आता और सन्त जी के शरीर को स्पर्श करके सौगन्ध खाता लेकिन उनमें से चार व्यक्ति सन्त जी के सामने आते ही काँपने लगे, उनकी सन्त जी के शरीर को स्पर्श करने की हिम्मत ही नहीं पड़ी। इस तरह कमांडर ने युक्ति से चोरी का पता लगा लिया।

अंग्रेज जादूगर

एक बार आपकी आर्मी में एक रिटायर्ड मेजर जादूगर आया, उसने कई जगह अपने जादू के करतब दिखाए थे। लोग उससे बहुत प्रभावित

थे, उसने अपने एक हाथ में चिड़िया को पकड़कर दूसरे आदमी से उसका सिर काटने के लिए कहा। लोगों ने देखा कि धरती पर खून गिर रहा था और वह चिड़िया मर गई थी। कुछ देर बाद उसने चिड़िया के दोनों भागों को जोड़कर उसे उड़ा दिया। फिर उसने लकड़ी का बुरादा मंगवाकर उस बुरादे को चीनी में बदल दिया। उस चीनी की चाय बनाकर अफसरों को पीने के लिए दी गई। जब उन्होंने चाय की पहली चुस्की ली तो उनसे पूछा क्या चाय मीठी है? तब उन्होंने कहा कि हाँ यह मीठी है। जब दोबारा चुस्की ली तो वह लकड़ी का बुरादा था। जादूगर ने कहा कि मैं यह खेल इस बांसुरी से करता हूँ, मेरी सारी शक्ति इस बांसुरी में है।

सन्त अजायब ने जादूगर को तंग करने के लिए सोचा, आपने अपने मन की एकाग्रता से उसकी बांसुरी को बाँध दिया। जब जादूगर ने बांसुरी बजानी चाही तो बांसुरी नहीं बजी। वह बहुत परेशान हुआ और उसने हमारे कमांडर से कहा कि आपकी फौज में कोई ऐसा व्यक्ति है जो शक्ति रखता है, उसने मेरी बांसुरी को बाँध दिया है। मैं उससे प्रार्थना करता हूँ कि वह अपनी शक्ति को हटा ले अन्यथा मैं आगे खेल नहीं दिखा सकूंगा। उसकी प्रार्थना सुनकर सन्त जी ने अपनी शक्ति को हटा लिया।

जादूगर ने कहा, ''आपको यह नहीं समझना चाहिए कि यह सच्चा जादू है। यह भी नहीं सोचना चाहिए कि मैं मुर्दे में जान डाल सकता हूँ अगर मैं ऐसा कर सकता तो इंग्लैंड के लोग मुझे यहाँ आने ही न देते। वहाँ के राजा-रानी मुझे अपनी सेवा में रख लेते। मैं यह सब अपने मन की एकाग्रता से लोगों को प्रभावित करने के लिए करता हूँ।''

स्त्री वेश में पुरुष

एक बार आप लाहौर में थे, तब सैनिकों के मनोरंजन के लिए एक नाचने-गाने वाली मंडली आई। उनमें एक आदमी, स्त्री के कपड़े पहनकर नाच रहा था। आप उस समय बहुत ही भोले थे, आपने भोलेपन से अपने

साथियों से कहा, ''यह स्त्री कितनी बहादुर है कि आदमियों के साथ नाच रही है।'' आपके साथियों ने हँसकर कहा कि यह स्त्री नहीं आदमी है इसने स्त्रियों वाले कपड़े पहन रखे हैं।

आप यह सुनकर हैरान हो गए और सोचने लगे कि यह आदमी थोड़े से पैसों के लिए स्त्री बनकर नाच रहा है। इसने चंद पैसों के लिए अपने आपको वार रखा है। मैं युगों-युगों से परमात्मा से बिछुड़ा हुआ हूँ, इसी तरह मुझे भी परमात्मा को पाने के लिए अपने आपको वारना होगा। मैंने इस बात से गहरा सबक लिया। सब लोगों ने उसे एक-एक रुपया दिया लेकिन मैंने उसे दस रुपये दिए।

युद्ध में नाम लिखवाना

जब सन्त अजायब फौज में भर्ती हुए उस समय लोग बीस साल की कैद मंजूर कर लेते थे लेकिन फौज में भर्ती नहीं होते थे। वह द्वितीय विश्वयुद्ध का समय था। उस समय सरकार जबरदस्ती फौज में भर्ती किया करती थी लेकिन आप खुशी-खुशी फौज में भर्ती हुए। फौजी जीवन में भी आपको मौत का रहस्य तंग करता रहता था। उन दिनों आपको एक साधु मिला। उस साधु ने कहा, ''जो सैनिक लड़ाई में मर जाता है वह सीधा स्वर्ग में जाता है।''

आप स्वर्ग में जाने के बहुत इच्छुक थे, आपने खुशी से लड़ाई के मोर्चे पर जाने के लिए अपना नाम लिखवा दिया। आपकी कम आयु देखकर सभी लोग हैरान थे। लड़ाई में जाने से पहले डाक्टरी जाँच होती थी। डाक्टर कमजोर जवानों को दूध दिए जाने की सिफारिश करता था। तब आपके कमांडर ने कहा, ''ये सब बलि के बकरे हैं यही अच्छा है कि सभी को आखिरी दिनों में दूध पीने के लिए मिल जाए।''

आप मोर्चे पर जाने से पहले बाबा बिशनदास जी से मिलने गए और आपको साधु ने जो कुछ कहा था आपने वह बाबा बिशनदास को बताया।

बाबा बिशनदास जी ने कहा, ''स्वर्गों में क्या है? स्वर्गों में भी जन्म-मरण है। लड़ाई-झगड़ा, प्यार और घृणा है। वहाँ एक देवता दूसरे देवता को देखकर जलता है, वहाँ भी भोग हैं। कर्तव्य पालन के लिए लड़ाई में जाएं। तुमने स्वर्गों में नहीं जाना है, तुम्हारा रास्ता ऊपर है।''

मौत का फरिश्ता किधर से आया

जब आप आर्मी में थे तो आपकी ड्यूटी एक रियासत में थी, उस रियासत का राजा बीमार था। महल के चारों तरफ फौज का कड़ा पहरा था। राजा की मृत्यु हो गई किसी को पता ही नहीं चला कि मौत का फरिश्ता आया किधर से और कान पकड़कर ले किधर गया? आपके लिए मौत का रहस्य और भी गहरा हो गया। इसका हल तभी समझ आया जब आप महाराज कृपाल के चरणों में पहुँचे।

श्रद्धालु जनरल

आपकी पलटन का जनरल विक्रम सिंह बहुत ही धार्मिक व्यक्ति था। वह साधु-सन्तों से मिलकर बहुत प्रसन्न होता था। आपके साथ उसका बहुत प्यार था। एक बार आपकी पलटन ब्यास गई तो वह भी महाराज सावन सिंह जी के दर्शनों के लिए गया। महाराज सावन सिंह जी उसे अपने बराबर कुर्सी पर बिठाना चाहते थे लेकिन वह उनके बराबर नहीं बल्कि नीचे धरती पर ही बैठा।

मुसलमान भाईयों की रक्षा

जब देश का बँटवारा हुआ, उस समय हिन्दु-मुस्लिम दंगे हुए। आपकी पलटन को भी व्यवस्था कायम करने में लगाया गया। उस समय आपने काफी मुसलमानों की रक्षा करके उन्हें सुरक्षित सीमा पार पहुँचाया। यहाँ तक मुसलमान भाइयों की सम्पत्ति को भी लुटने से बचाया। उस समय कट्टर सिख भाइयों का विचार था कि इन्हीं मुसलमानों ने हमारे गुरुओं को तंग किया और उनके बच्चों का कत्ल किया। आपने सिख भाइयों को

प्यार से समझाया, ''यह तो उस समय के मुगल शासकों ने किया, इन बेचारे मुसलमान भाइयों का क्या कसूर है?''

आपका एक कमांडर भी मुसलमान था। आपने उसके परिवार की रक्षा की और उसे सुरक्षित पाकिस्तान पहुँचाने में मदद की। वह कमांडर जब आपसे विदा लेने लगा तो उसकी आँखें कृतज्ञता से भर आई और उसने कहा, ''सन्त जी, आपके अंदर मुझे खुदा का नूर दिखाई देता है।'' आपने उसे बड़े प्यार से विदाई देते हुए कहा, ''साहब, मैंने आप पर कोई अहसान नहीं किया, मैंने तो सिर्फ अपना फर्ज पूरा किया है।''

फौज से सेवानिवृति

देश स्वतंत्र होने पर रियासतें समाप्त हो गई, आप पटियाला रियासत की सेना में थे। उस समय यह विकल्प रखा गया कि जो सेना में रहना चाहे वह भारतीय सेना में भर्ती हो जाए और जो घर जाना चाहे वे ग्रेच्युएटी लेकर अपने घर जा सकते हैं। अत: आप फौज से सेवानिवृत हो गए।

सन्त जी की लम्बी खोज जारी रही। आप अनेक महात्माओं से मिले लेकिन आपको बाबा बिशनदास जी जैसे गुण किसी में भी नहीं मिले। अब आपका विचार था कि मैं बाबा बिशनदास जी के चरणों में रहने के लिए प्रार्थना करूंगा ताकि इस गरीब आत्मा का उद्धार हो सके।

विधि को कुछ और ही मंजूर था। बाबा बिशनदास जी ने अजायब को आदेश दिया कि घर जाकर अपने माता-पिता का बोझ ढोएं और उनकी खूब सेवा करें। पहले तो सन्त अजायब ने यह स्वीकार नहीं किया लेकिन जब बाबा बिशनदास जी ने आपको आपके पिछले जन्म का वृतांत बताया और आपके पिछले जन्म की हड्डियाँ भी निकालकर दिखाई तो अजायब चुपचाप अपने घर की तरफ चल पड़े।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

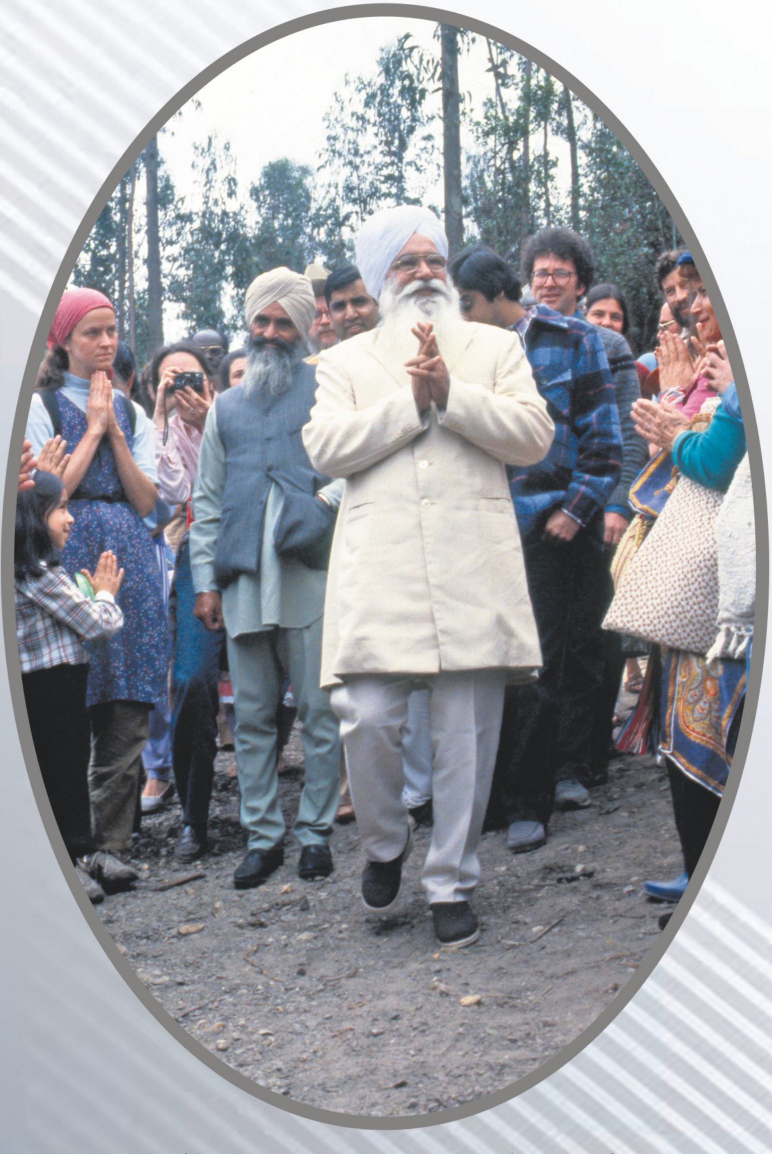

जिस तरह मन अपने मालिक का काम पूरी लगन से करता है, उसी तरह शिष्य को भी अपने गुरु का काम पूरी लगन से करना चाहिए। शिष्य को अपना मुख गुरु की तरफ रखना चाहिए। हमेशा गुरु को याद करें, गुरु के बारे में सोचें, गुरु के आगे रोएं। हमने अपना सारा जीवन दुनियावी चीजों के लिए लगा दिया, आप पूर्ण विश्वास रखें कि गुरु हर समय आपके साथ हैं।